

bringen, wieder gut machen: अथशुद्धिमाणांश्च सर्वतः सुसमाहितान् R. 5, 17, 1. न ते (देवाः) शक्याः समाधातुम् MBh. 15, 194 (= Hit. III, 38). उत्पन्नमापदे यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान् Hit. IV, 6. समाहित = निर्विवादीकृत beigelegt, versöhnt Mbh. I. 226. — 5) hervorbringen, bewirken: परं कृषं समाधत्तु HAriv. 8671. machen: अजश्यामो तु पाशौ तावुभावपि समाहितौ schwarz gemacht 11075. समाहित = निष्पन्न Dhar. im CKDr. — 6) med. anlegen (ein Kleid): नैव वासः समाधत्ते HAriv. 10725. कपिद्वयं समाधाय Affengestalt annehmend Upag. Av. 5. in sich aufnehmen (eine Leibesfrucht), concipere: तमकम् — समाधाय्ये जपोत्सुकम् R. 1, 46, 14 (Gorr. 47, 13). an sich nehmen, sich zueignen: धूपचन्दनैलादिविक्रयोत्थं समाधत्ते । इविषां देववेश्मभ्यः Rāga - Tar. 5, 167. annehmen, an sich zur Erscheinung bringen, zeigen: बोधिर्यम् Upag. Av. 20. क्रोपं समाधत्ते so v. a. geriet in Zorn HAriv. 3919. धैर्यं समाधाय R. 3, 34, 1. त्रैलोक्यविजयार्थाय समधायैकनिश्चयम् तौ MBh. 1, 7625. मानः समाधीयताम् Amar. 78. मनसा यत्नः समाधीयताम् Bhart. 3, 35. — 7) med. (in sein Herz legen) seine ganze Aufmerksamkeit auf Etwas (acc.) richten, sich ganz einer Sache hingeben: युज्यते = समाधत्ते Siddh. K. zu P. 7, 1, 71. देवकार्यमिदं समाधत्स्व R. 1, 38, 11. कल्याणानि समाधत्ते न पापे कुरुते मनः 2, 54, 29. ब्रह्म समाधत्तानां 5, 11, 14. रामस्य चार्थनिर्वृतिं भर्तुश्च परमं यशः । समाधाय 59, 16. समाधायैतिकर्तव्यम् HAriv. 6830. अतः चिरं सुधीरभ्यधिकं समाधात् (Schol. = चिन्तितवान्) Bhart. 12, 6. — 8) med. festsetzen, feststellen, als ausgemacht hinstellen: समाधत्ते Schol. zu Kap. 1, 10 (Ball.: he declares). 54 (Ball.: he disposes of it as follows). न क्षेप समुदाचरो देवेभ्यः समाहितः so v. a. geltend, üblich HAriv. 11392. समाहित = उत्कृष्टज्ञान festgestellt, bewiesen Mbh. I. 225. — 9) med. Etwas einräumen, zugeben: न समाधत्ते als Erkl. von नाभिनन्दति Kull. zu M. 8, 54. समाहित = संश्रुत, प्रतिज्ञात AK. 3, 2, 58. H. an. 4, 128. Mbh. I. 226. — 10) समाहित gleich (zusammengestellt): रामस्य दयिता भार्या नित्यं प्राणसमाहिता R. 4, 1, 26. पुराणम् — वेदश्रुत-समाहितम् HAriv. 2225. — Vgl. समाधा fgg. — desid. Jmd (acc.) dahin zu bringen wünschen, dass er sich sammelt: आत्मानमसमाधाय समाधत्सति यः परान् MBh. 12, 9586.

— अनुसमा auf einen Punkt fest richten: बुद्धिः प्रणिहिता येन मनः शानुसमाहितम् vollkommen gesammelt R. 2, 22, 14.

— अभिसमा, partic. अभिसमाहित verbunden, vereinigt mit (instr.) R. 5, 90, 31.

— उपसमा hinzulegen (Holz zum Feuer) Cat. Br. 5, 6, 4, 1. इधम् Kauç. 67. anlegen, anschüren (Feuer auf dem Heerde u. s. w.): मथि-लोपसमाधापोद्धत्याकृवनीयं यजते Cat. Br. 4, 6, 3, 5, 6, 4, 10. 14, 9, 2, 1. 4, 11. Kauç. 70. Āçv. Grh. 1, 8. Śukānd. Up. 4, 6, 1. तं (अङ्गारं) तृणरूप-समाधाय 6, 7, 5. (कला) अन्वेनोपसमाहिता 6. aufstellen, hinstellen an seinen Platz: उपसमाधीयमानपरिणयोपकरणं (भवन) Daçak. in Benf. Chr. 201, 9. — Vgl. उपसमाधान.

— प्रतिसमा 1) auflegen (den Pfeil): (तेन) अविहारे मृगान्दष्टा वाणः प्रतिसमाहितः MBh. 13, 266. — 2) Etwas wieder an seinen Platz stellen, in Ordnung bringen, wiederherstellen: कर्णकुवलयं स्रस्तमिति प्र-तिसमाधत्ती Daçak. in Benf. Chr. 196, 20. (धर्मः) बाधितो ऽपि चात्पा-यासप्रतिसमाहितः ebend. 182, 7.

III. Theil.

— आविम्, partic. आविर्हित zum Vorschein gekommen Bhāg. P. 2, 7, 36.

— उद् 1) aussetzen: वृत्ते गर्भं मृतमुद्घास्यति Cat. Br. 4, 5, 2, 13. (पितरः) ये दग्धा ये चोद्धिताः AV. 18, 2, 34. शोणान् जित्रिमुद्धितम् Vāṭsk. 3. 2. aus-legen(?): कर्पूरः कपूथमुद्धातन RV. 10, 101, 12. — 2) aufstellen, auf-setzen: उद्धितं रथचक्रम् Cat. Br. 5, 1, 5, 1. 2. aufbauen: शिवा मानस्य प-लि न उद्धिता तन्वे भव AV. 9, 3, 6. ब्रह्मणा वेदिरुद्धिता 19, 42, 2.

— उप 1) auflegen, anlegen, aufsetzen, legen in; act. med.: उपधेहि बा-हुम् Nir. 4, 20. Āçv. Grh. 2, 21. उप धत्स्व कृत्स्नम् AV. 14, 2, 39. अधि-ज्ञानं वाहुमुपधाय Cic. 9, 54. उभेभ्योविजृम्भं धेहि देष्टा RV. 10, 87, 3. उपं ते ऽधो सक्तमानाम् 145, 6. इष्टकाम् Cat. Br. 2, 1, 2, 15. P. 4, 4, 125. Sch. श्रोषधीः Cat. Br. 7, 2, 2, 1. 6, 2, 2, 17. अंसधौ श्रुदामुप धेहि नारि auf das Feuer setzen AV. 11, 1, 23. कपालानि Cat. Br. 2, 6, 2, 4, 3, 5, 4, 22. पात्रौ स्पर्शोपहिता auf den S. gesetzt Kāt. Çr. 2, 3, 28. (अग्निम्) अधस्तातोपद-ध्यात् stelle nicht unter Etwas M. 4, 54. उपहितं शिशिरागमश्चिया मु-कुलजालम् — जिम्बुके Ragh. 9, 27. भीमे चोपाधितानने steckte in Bhart. 15, 47. क्लेशोपाहितो मणिः hineingesetzt in, eingefasst in MBh. 5, 3382. उप-हितनिर्मलवज्रवीथिकायाम् (सभायाम्) HAriv. 12705. पुरवनितानां मनसि कु-सुमशरासनमुपदधानः den Liebesgottin's Herz setzend Bhāg. P. 5, 3, 31. हृदि चैनाम् (सरस्वतीम्) उपधातुमर्हसि so v. a. beherzigen Ragh. 8, 76. anlegen (die Rosse): उप त्मनि दधानो धुर्यांश्च R. V. 4, 29, 4. उपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्ध-देशे वत्कलेन so v. a. angebracht Çāk. 18. auf Jmd legen so v. a. die Sorge um Etwas Jmd übertragen: तदुपहितकुटुम्बः Ragh. 7, 68. क्रियाम् Mühe an Etwas wenden: क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति 3, 29. auf Jmd über-tragen so v. a. lehren: मिथः स्त्रीषु नृत्यमुपधाय 19, 36. — 2) Etwas sich un-terlegen, sich auf Etwas legen: तस्याकम् — उपधाय भुजं सव्यम् — कथं नामोपधास्यामि भुजमन्यस्य कस्यचित् R. 5, 23, 13, 14. काष्ठं वा यदि वा-ष्मानमुपधाय शयिष्यते R. Schl. 2, 42, 16. 61, 7. 5, 13, 56. — 3) belegen, bedecken, umhüllen: अविग्रयात्मन्युपधीयमाने Bhāg. P. 5, 3, 6. एतदुप-हितं चैतन्यम् Vedāntas. (Allab.) No. 25. 40. 62. 64. 72. 73. 75. 77. 78. Ball.: located. — 4) hinzusetzen, hinzufügen: ऋचः Ait. Br. 5, 10. Lāt. 4, 8, 7. प्रा-णे होमान्यङ्गान्युपेव हितानि sich anschliessend an Cat. Br. 6, 1, 2, 25. — 5) in der Gramm. sich legen auf so v. a. unmittelbar vorhergehen: प्रथमैरुप-धीयमानः शकारः ein श, auf welches sich die Ersten (eines Varga) legen, d. i. ein auf die Ersten folgendes श RV. Prāt. 4, 2. इत्येतेन — पदैरुपहितेन 2, 16. स्वरानुस्वरोपहित 6, 1. Vgl. उपधा. — 6) herbeischaffen, herbei-führen; ertheilen: आसनानि — प्रयतोपहितानि MBh. 1, 2891. उपहि-तबलि v. l. für उपचित° Megh. 56. सर्वकामैरुहितैरुपपन्नः समन्ततः (यज्ञः) R. Gorr. 1, 12, 34. यदिन्द्रियैस्तूपहितं पुरस्तात्प्राप्तान्गुणान्संस्मरते चिराय MBh. 12, 7417. यदा तु भाग्यन्तयपीडितो दृशा नरः कतातोपहितां प्रपद्यते Māh. 23, 3. उपहितस्मृतिरङ्गलिमुद्रया Einschalt. nach Çāk. 135. शब्देपहितरूप Bhart. in Sāh. D. 32, 4. उपहितशोभा (अयोध्या) Bhart. 2, 55. परमस्वामिना स्वयमुपहितराव्याभिषेकः in einer Inschr. in Journ. of the As. Soc. of B. IV, Pl. XL, Z. 6. 7. उपहित so v. a. bereit, fertig: निवेशनं च कुप्यं च लेत्रं भार्या मुहृज्जनः । एतान्युपहितान्याहुः सर्वत्र ल-भते पुमान् ॥ MBh. 12, 5219. कतावुपहिते न्यस्तं हविः 13, 2286. — 7) उपहित wohl als Spion zu Jmd geschickt (vgl. प्राणि): व्यक्तं त्वमायु-पहितः पाण्डवैः पाण्डेश्वर MBh. 8, 1861. 12, 4159. 4161. Benfry (Pāṇāt. Bd. I, S. 381) übersetzt das Wort an der zweiten Stelle durch diejenigen

38